हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)

(स्पर्श) (पाठ 5)(सुमित्रानन्दन पंत – पर्वत प्रदेश में पावस)

(कक्षा 10)

प्रश्न अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(1).
पावस श्रृतु में प्रकृति में कौन–कौन से परिवर्तन आते हैं ? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 1:
पावस श्रृतु में प्रकृति पूरी हरी–भरी दिखाई देने लगती है पल–पल में पकृति अपना रूप बदलती है। कभी एक दम पानी बरसने लगता है तो कभी तेज धूप निकल आती है । अचानक काले बादल घिर जाने से ऐसा लगता है तानों इंद्र अपना इंद्रजाल दिखा रहा हों । झरने भी गिरते हुए ऐसे लगते हैं मानो मोती बरस रहे हों ।

(2).
'मेखलाकार' शब्द का क्या अर्थ है ? कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया है ?

उत्तर 2:
मेखला का अर्थ है करधनी । पर्वत – श्रृंखलाओं के लिए मेखलाकार शब्द का प्रयोग किया गया है । दूर–दूर तक फैली पर्वत श्रेणियॉ ऐसी लग रही हैं मानो पर्वत की विशाल कमर हो।

(3).
'सहस्र दृग–सुमन' से क्या तात्पर्य है ? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा ?

उत्तर 3:
वर्षा श्रृतु में चारों तरफ खिले हुए फूल ऐसे लगते हैं मानों विशाल पर्वत अपनी सैकड़ों ऑखों से पूरी प्रकृति को निहार रहा हो।

(4).
कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों ?

उत्तर 4:
कवि ने तालाब की समानता दर्पण से करते हुए यह दिखाया है कि जिस प्रकार दर्पण में चेहरा दिखाई देता है ठीक उसी प्रकार तालाब में उॅचे–उॅचे पर्वतों के प्रतिबिंब साफ दिखाई दे रहे हैं ।

(5).
पर्वत के हृदय से उठकर उचे–उँचे वृक्ष आकाश की ओर क्यों देख रहे थे और वे किस बात को प्रतिबिंबित करते हैं ?

उत्तर 5:
पर्वत के हृदय से उठकर उचे–उँचे वृक्ष आकाश की ओर इसलिए देख रहे हैं कि वे भी आकाश को छूना चाहते हैं । पेड़ों की इस भावना के द्वारा कवि मानव के उॅचाइे की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति को दिखाना चाहता है ।

(6).
शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धँस गए ?
उत्तर 6:
घनघोर वर्षा और धुंध के कारण ऐसा प्रतीत होता हैं कि शाल के वृक्ष धरती में धॅस गए हैं ।

(7).
झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं ? बहते हुए झरने की तुलना किससे की गई है ?
उत्तर 7:
बहते झरने हुए ऐसे लग रहे हैं कि मानों वे गा–गा कर पर्वतों के गौरव का गान कर रहे हों ।

(ख).
निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए ।
(1)
है टूट पड़ा भू पर अंबर।
उत्तर 1:
कवि ने इन पक्तियों के द्वारा पर्वतों पर होने वाली मूसलाधार वर्षा का वर्णन किया है उनके अनुसार ऐसी वर्षा को देखकर ऐसा लगता है मानों धरती पर आकाश ही टूट पड़ा हो।

(2).
यों जलद–यान में विचर–विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल।
उत्तर 2:
अचानक वर्षा का होना और अचानक ही धूप खिल जाना अचानक ही अंधेरा छा जाना प्रकृति के पल–पल बदलते इतने रूप देखकर ऐसा लग रहा जैसे खुद इंद्र ही अपना काला जादू इद्रजाल दिखा रहा हो ।

(3).
गिरिवर के उर से उठ–उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।
उत्तर 3:
पर्वत पर उगे विशाल वृक्षो को देख कर ऐसा लगता है मानों वे अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए आसमान को छूना चाहते हों । इसीलिए वे स्थिर होकर कुछ सोचते हुए अपने सपनों के पूरा होने की चिंता में खाली आकाश की ओर झांकते से लग रहे हैं ।